INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in May 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

कबीर और तुलसीदास के रामः आस्था. दर्शन और सामाजिक चेतना के आयाम

डॉ. सीमा सुरोलिया, व्याख्याता, हिन्दी विभाग, जगदम्बा पी.जी. कॉलेज, खाजूवाला (बीकानेर)

भारतीय भक्ति साहित्य में कबीरदास और गोस्वामी तुलसीदास दो ऐसे अप्रतिम व्यक्तित्व है. जिन्होंने 'राम' नाम को अपनी–अपनी तरह से परिभाषित किया और जनमानस मैं गहरी पैठ बनाई। जहॉ तुलसीदास काराम सगुण. मर्यादा पुरूषोतम और अवतार रूप में पूजे जाते हैं. वहीं कबीर के राम निर्गुण. निराकार और घट–घट वासी ब्रहम है। इन दोनों के राम–दर्षन में मूलभूत अंतर होने के बावजूद. उनका अंतिम लक्ष्य मानव कल्याण और आध्यात्मिक उन्नति ही रहा है।

तुलसीदास के रामः मर्यादा. प्रेम और लोक–मंगल के प्रतीक

तुलसीदास के राम. जैसा कि उनके अमर ग्रंथ 'रामचरितमानस' में वर्णित है. सगुण ब्रहम का साकार रूप हैं। वे दशरथनंदन. सीतापति. और अयोध्या के राजा है। तुलसीदास ने राम को एक आदर्श पुत्र. आदर्श भाई. आदर्श पति. आदर्श मित्र और आदर्श राजा के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके राम करूणा. धैर्य. शौर्य. त्याग और प्रेम के साक्षात प्रतीक है। 'रामचरितमानस' में राम का जीवन केवल एक राजा का जीवन नहीं है. बल्कि वह धर्म. नीति और मर्यादा का आदर्श प्रस्तुत करता है।

तुलसीदास के राम का अवतार लेने का मुख्य उद्देश्य दुष्टों का संहार और सज्जनों का उद्धार करना है। वे लोक–मंगल की भावना से ओतप्रोत है। उनके चरित्र में हमें मानवीय दुर्बलताओं से ऊपर उठकर आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। तुलसीदास ने राम के माध्यम से तत्कालीन समाज में व्याप्त कुरीतियों. अनीति और अधर्म पर प्रहार किया। वे वर्ण व्यवस्था के समर्थक भले ही रहे हों. लेकिन उन्होंने राम के दरबार में शबरी. निषादराज जैसे निम्न वर्ग के लोगों को भी सम्मान दिलाया. जिससे यह संदेश मिलता है कि ईश्वर की भक्ति में कोई भेद नहीं होता।

तुलसीदास की भक्ति पद्धति दास्य भाव की हैं. जहॉ भक्त स्वयं को दास और राम को स्वामी मानता है। उनका मानना था कि राम नाम का स्मरण ही भवसागर से पार उतरने का एकमात्र साधन है। 'रामचरितमानस' की लोकप्रियता काएक बड़ा कारण उसकी सरल अवधी भाषा और गेयता भी है. जिसने उसे जन–जन तक पहुँचाया। तुलसी के राम केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं. बल्कि भारतीय संस्कृति और सभ्यता के अभिन्न अंग बन गए हैं।

कबीर के रामः निर्गण. निराकार और अनुभवगम्य ब्रहम

इसके विपरीत. कबीर के राम किसी दशरथ के पुत्र नहीं. न ही वे अयोध्या के राजा हैं। कबीर का राम एक ऐसी परम सता हैं जो जन्म–मरण से परे हैं. जिसका कोई रूप नहीं. कोई आकार नसहीं और न ही वह किसी विशेष स्थान पर निवास करता है। कबीर के लिए राम 'घट–घट वासी' हैं. यानी वे हर प्राणी के भीतर विद्यमान हैं। वे कहते हैंः ''पानी में मीन प्यासी. मोहि सुनि सुनि आवै हांसी।'' अर्थात. ईश्वर हर जगह है. लेकिन मनुष्य उसे बाहर ढूंढता है।

कबीर ने मूर्ति पूजा. तीर्थ यात्रा और बाहरी आडंबरों का खंडन किया। उनके लिए सच्ची भक्ति ह्रदय की पवित्रता और आंतरिक शुद्धि में निहित थी। उन्होंने राम को किसी एक धर्म या जाति से नहीं जोड़ा. बल्कि उसे सार्वभौमिक सत्य के रूप में प्रस्तुत किया। उनके राम वे हैं. जो 'राम–नाम' के रूप में हर श्वास में बसते हैं। उन्होंने नाम–स्मरण को ही मोक्ष का मार्ग बताया। कबीर के राम–दर्षन में सामाजिक चेतना भी निहित है। उन्होंने जातिवाद. छुआछूत और धार्मिक पाखंडों पर तीखे प्रहार किए। उनके राम सबके लिए समान हैं. चाहे वह हिंदू हो या मुसलमान. ब्राहमण हो या शूद्र। वे कहते हैंः ''जाति न पूछो साधु की. पूछ लीजिये ज्ञान।'' कबीर के राम समाज में समानता और भाईचारे का संदेष देते हैं। उनकी भाषा सधुक्कड़ी या पंचमेल खिचड़ी थी. जिसमें अरबी. फारसी. खड़ी बोली आदि के शब्द मिश्रित थे. जो यह दर्षाता है कि वे किसी एक क्षेत्र या समुदाय तक सीमित नहीं थे।

तुलसी और कबीर के राम में अंतर और समन्वय

दोनों संतों के राम–दर्शन में स्पष्ट अंतर होने के बावजूद. कुछ समानताएं भी है। दोनों ने ही राम नाम की महिमा का गुणगान किया और उसे भवसागर से पार करने का साधन माना। दोनों ने ही सच्चे प्रेम और भक्ति को सर्वोपरि बताया। दोनों ने ही सामाजिक कुरीतियों पर अपनी–अपनी तरह से प्रहार किया।

तुलसीदास का राम–दर्शन जहाँ समाज को एक व्यवस्थित ढाँचे में ढालने और आदर्श स्थापित करने पर बल देता हैं. वहीं कबीर का राम–दर्शन व्यक्ति को आंतरिक मुक्ति और सामाजिक समानता की ओर ले जाता है। तुलसी ने 'लोक–धर्म' की स्थापना की. जबकि कबीर ने 'आत्म–धर्म पर जोर दिया।

निष्कर्षतः. कबीर और तुलसीदास. दोनों ने ही भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक चिंतन को अपने 'राम'

के माध्यम से समृद्ध किया। तुलसी के राम ने जहाँ करोड़ों लोगों को मर्यादा. प्रेम और त्याग का पाठ पढ़ाया. वहीं कबीर के राम ने उन्हें आडंबरों से मुक्त होकर सच्ची आत्म–ज्ञान की ओर अग्रसर किया। दोनों के राम एक ही परम सत्य के दो भिन्न–भिन्न रूप हैं. जो अलग–अलग माध्यमों से जन–जन को मोक्ष और शांति का मार्ग दिखाते हैं। भारतीय जनमानस में आज भी दोनों के राम अपनी–अपनी जगह पर पूजनीय और प्रासंगिक हैं। तुलसी के राम हमें सामाजिक मर्यादाओं का पालन सिखाते हैं. तो कबीर के राम हमें भीतर के राम को पहचानने की प्रेरणा देते हैं। यही इन दोनों महान संतों की अमर विरासत हैं।

ग्रन्थ–सूची (संदर्भ और अध्ययन हेतु)

यह लेख कबीरदास और गोस्वामी तुलसीदास के राम–दर्षन की सामान्य समझ पर आधारित हैं। इसे तैयार करने में निम्नलिखित प्रकार के ग्रंथों और अध्ययनों से प्रेरणा ली गई हैं:

प्राथमिक स्त्रोत (*Primary Sources*):

1. गोस्वामी तुलसीदासः
- रामचरितमानसः (विभिन्न टीकाओं और संस्करणों सहित. जैसे गीता प्रेस. हनुमान प्रसाद पोद्दार. नागरी प्रचारिणी सभा. आदि)। यह तुलसीदास के रामके सगुण स्वरूप का मुख्य आधार ग्रंथ है।
2. कबीरदासः
- कबीर ग्रंथावलीः (श्यामसुंदर दास. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी. हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा संपादित संस्करण)। इसमें कबीर के साखी. सबद और रमैनी संकलित हैं. जो उनके निर्गुण राम–दर्शन का मूल स्त्रोत हैं।
- कबीर बीजकः (धर्मदास द्वारा संकलित. विभिन्न टीकाओं सहित)। यह कबीर की वाणियों का एक अन्य महत्वपूर्ण संग्रह है।

माध्यमिक स्त्रोत (*Secondary Sources* –आलोचनात्मक और शोधपरक ग्रंथ):

1. आचार्य रामभंद्र शुक्लः
- हिंदी साहित्य का इतिहासः (तुलसीदास और कबीर पर विस्तृत खंड)। यह हिंदी आलोचना में एक मील का पत्थर है और दोनों कवियों पर मौलिक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।
- गोस्वामी तुलसीदासः (तुलसीदास के व्यक्तित्व और कृतित्व का गहन विष्लेषण)।
2. आचार्य हजारी प्रसाद दृविवेदीः
- कबीरः (कबीर के व्यक्तित्व. दर्शन और काव्य का विस्तृत अध्ययन)। यह कबीर पर एक अधिकारिक और व्यापक कार्य है।
- हिंदी साहित्य की भूमिकाः (भक्ति आंदोलन के संदर्भ में दोनों कवियों पर चर्चा)।
3. डॉ. रामकुमार वर्माः
- हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहासः (भक्ति काल के संदर्भ में दोनों पर विचार)।
4. डॉ. श्यामसुंदर दासः
- कबीर ग्रंथावली की भूमिकाः (कबीर के दर्शन पर महत्वपूर्ण विचार)।
5. परशुराम चतुर्वेदीः
- उतरी भारत की संत–परंपराः (संत कवियों और उनके दर्षन पर व्यापक अध्ययन)।
6. पीताम्बर दत बड़थ्वालः
- योग प्रवाह में कबीर का स्थान (कबीर के दार्षनिक पक्ष पर प्रकाष)।
7. मैक्ग्रेगर. आर.एल. (*R.L.McGregor*)%
- "*The Ramcaritmanas of Tulsidas*" (तुलसीदास और उनके रामकाव्य पर अंग्रेजी में महत्वपूर्ण कार्य)।
8. वाल्डिस आर. नेवेत्स्की (*Valdis R.Nevels*):
- "*Kabir andthe Bhakti Tradition*" (कबीर के भक्ति दर्शन पर शोध)।
9. विभिन्न शोध पत्र और समीक्षाएंः साहित्यिक अकादमियों. विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएं जो हिंदी साहित्य. भक्ति आंदोलन और भारतीय दर्शन पर केंद्रित हैं।